सप्रू हाउस : ऐतिहासिक धरोहर

पुष्पित होते हैं विचार मंथन को मिलता है आकार

बाराखंभा रोड पर स्थित दो एकड़ भूमि में फैला सप्रू हाउस। भारत की सबसे पुरानी विदेश नीति का थिंक टैंक। अपनी खूबसूरत इमारत ही नहीं बल्कि बौद्धिक केंद्र के तौर पर आज भी बुद्धिजीवियों के बीच अपनी अलग पहचान है इस स्थान की। आज भी यहां अंतरराष्ट्रीय मामलों और विदेश नीतियों पर चर्चा होती है। गुंबदनुमा इमारत का इतिहास वही कोई सात दशक पुराना है। दिल्ली की दौड़ती-भागती सड़कों के बीच सप्रू हाउस देखकर लगेगा कि समय के पहिए को मानों आज भी थामे हुए है। इमारत की वास्तुकला भी बहुत प्रभावशाली है। हिंदू वास्तुकला की स्तंभ संरचना के साथ इस्लामिक गेटवे डिजाइन और स्तूप शैली का गुंबद। इसे आकार दिया था सिडनी पर्सी लैंकेस्टर ने। लैंकेस्टर केंद्रीय लोक निर्माण विभाग में तत्कालीन बागवानी प्रमुख थे। वहीं, इसके आर्किटेक्ट मास्टर, साठे और भूटा थे। इमारत में प्रवेश करते ही दोनों तरफ पार्क में लगे हरे-भरे पेड़ तरोताजगी का एहसास कराते हैं। दाईं ओर बढ़ेंगे तो सप्रू हाउस का भव्य स्वागत कक्ष है। प्रवेश द्वार से ठीक सामने मौजूद सीढ़ियां इतिहास के उन दानदाताओं का उल्लेख करती हैं जिन्होंने इसकी ईंटों को जोड़ने में अंश दान दिया। सीढ़ी से ऊपर की तरफ बढ़ते ही सामने दीवार पर तीन पट्टिकाओं में 100 से अधिक दानदाताओं के नाम हैं। पश्चिम मध्य प्रदेश की मालवा रियासत के महाराज यशवंतराव होलकर ने इस केंद्र की स्थापना के लिए उस समय डेढ़ लाख रुपये दिए थे। इसके इतिहास पर विस्तार से चर्चा करते हुए भारतीय वैश्विक परिषद की संयुक्त सचिव नूतन कपूर महावर बताती हैं कि यह भारत में एकमात्र थिंक टैंक है जहां सेवारत विदेश सेवा के अधिकारी प्रतिनियुक्त होते हैं।

सप्रू हाउस के लिए जुटाने थे 10 लाख रुपये : 1943 में जब भारत आजाद नहीं था। उस वर्ष वकील और राजनेता तेज बहादुर सप्रू व अन्य कई बुद्धिजीवियों ने तय किया कि विश्व से संबंधित मामलों में भारत के स्वतंत्र दृष्टिकोण के लिए एक थिंक टैंक की आवश्यकता है। 21 नवंबर 1943 को फिक्की कार्यालय में हुई अनुवर्ती बैठक में ये तय किया गया कि विश्व मामलों पर अध्ययन के लिए एक स्वतंत्र संगठन की स्थापना होनी चाहिए। इस विचार का सभी ने उत्साहपूर्वक स्वागत किया और विश्व मामलों की भारतीय परिषद की स्थापना का निर्णय लिया गया। इसके बाद परिषद के सदस्यों ने 12 मार्च 1945 से लेकर 30 मार्च 1948 तक दरियागंज, फिरोजशाह रोड, कैनिंग रोड, कनाट प्लेस समेत कई अन्य जगहों पर कार्यकारी समिति की बैठकें की। इसके बाद परिषद ने अपने लिए स्थायी पता और एक उपयुक्त भवन स्थापित करने की मांग उठाई। ताकि परिषद कहां पर एक अनुसंधान विभाग, विश्व मामलों से संबंधित पुस्तकालय बना सकें। परिषद उस समय संसद मार्ग में अपना स्थायी पता बनाना चाहता था। इस बीच भारत की आजादी के 17 माह बाद 20 जनवरी 1949 को सप्रू ने अंतिम सांस ली। सप्रू के निधन के बाद परिषद ने 22 फरवरी 1949 को एक बैठक के दौरान सप्रू की याद में एक स्थायी स्मारक बनाने पर विचार किया गया। चूंकि वो परिषद के पहले अध्यक्ष थे और उन्होंने परिषद को गतिविधियों में गहरी रुचि ली थी और एक मार्ग दर्शक के तौर पर अपनी भूमिका निभाई थी। संजोग रहा और भवन की मांग और सप्रू की याद में स्मारक दोनों को सप्रू हाउस के रूप में आकार देना तय हुआ। इस हाउस में परिषद का मुख्यालय स्थापित किया गया। अब समस्या थी कि इसके निर्माण के लिए रुपये कहां से आएं। परिषद ने 10 लाख रुपये जुटाने के लिए फंड संग्रह अभियान शुरू किया। तत्कालीन सरकार ने भी सप्रू हाउस फंड के लिए किए गए दान में आयकर छूट की घोषणा की। सरकार ने परिषद को पांच हजार रुपये प्रति एकड़ की दर से भूमि (1.99 एकड़) आवंटित की। जिसके बाद 1955 में तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने भारतीय वैश्विक परिषद के मुख्यालय के रूप में सप्रू हाउस का उद्घाटन किया। कई अस्थायी कार्यालयों के बाद सप्रू हाउस एक तरह से परिषद का स्थायी कार्यालय हो गया था। इसके निर्माण में भारत के राष्ट्रपति डा. राजेंद्र प्रसाद ने एक हजार रुपये और प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरु ने 500 रुपये दान दिए थे। कई प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित भारतीय थिंक टैंक और संगठन जैसे इंस्टीट्यूट फार डिफेंस स्टडीज एंड एनालिसिस, स्कूल आफ इंटरनेशनल स्टडीज (बाद में इसे जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में विलय कर दिया गया), चिल्ड्रेंस फिल्म सोसायटी आफ इंडिया और भारतीय प्रेस संस्थान की स्थापना भी इस भवन में की गई। भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू, भारत की विदेश नीति के निर्माता, प्रसिद्ध विद्वान, बुद्धिजीवी वर्ग और शिक्षाविद सप्रू हाउस के नियमित आगंतुक थे।

रीतिका मिश्रा

सप्रू हाउस, भव्य इमारत और वास्तु का नायाब बेजोड़ नमूना है। विचारों के इस 'थिंक टैंक' की भव्यता वैश्विक पटल तक गूंजती है। जागरण

सप्रू हाउस। वास्तुकला का नायाब नमूना। दिनरात व्यस्त मार्ग, सड़कों के बीच इतिहास को संजोए गौरव के साथ खड़ा है ये हाउस। अब जरूर इमारतों के लिए चुटकियों में टेंडर हो जाते हैं, कुछ दिनों में भव्य आलीशान इमारत आकार ले लेती हैं, फिर भी ऐतिहासिक इमारतों का बेजोड़ नमूना आज बनाना आसान नहीं है। और पाई-पाई जोड़कर तब ईंटें जोड़ना अपने आप में गर्व की अनुभूति होती है। वैसे भी आज जब भारत की विदेश नीति की वैश्विक पटल पर चर्चा होती है। रूस-यूक्रेन युद्ध पर भारत पूरे आत्मविश्वास के साथ अपना पक्ष बेबाकी से रखता है, ऐसे गौरवान्वित क्षणों में सप्रू हाउस स्थित थिंक टैंक भी कहीं न कहीं अपनी भूमिका अदा करता है। इस हाउस के बौद्धिक विकास में एक नया स्थान पुस्तकालय के विस्तार के रूप में और जुड़ गया है, जिसे अब आगे और आकार दिया जा रहा है। सवरंग के इस अंक में देश के इसी थिंक टैंक के इतिहास से रूबरू करा रहे हैं :

383 बुद्धिजीवी यहां के कान्फ्रेंस हाल में चिंतन कर सकते हैं

विदेश नीतियों पर मंथन का मंच

भारतीय वैश्विक परिषद के उप सचिव डा. वैभव ए तांदले कहते है कि इस केंद्र में संचालित हो रहा भारतीय वैश्विक परिषद अंतरराष्ट्रीय मामलों और विदेश नीतियों से संबंधित मुद्दों पर बातचीत के लिए एक मंच के रूप में काम करता है। साथ ही अध्ययन, शोध, चर्चा, व्याख्यान के माध्यम से अन्य देशों के साथ भारत के संबंध को बढ़ावा देने में और विदेशी मामलो से संबंधित पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, समीक्षाओं, शोधपत्रों व अन्य साहित्य का प्रकाशन का कार्य करता है। यहां अंतरराष्ट्रीय मामलों को लेकर कान्फ्रेंस, सेमिनार, पैनल चर्चा का आयोजन भी होता रहता है। अंतरराष्ट्रीय हस्तियां नियमित रूप से आती हैं और सभाओं को संबोधित करती हैं।

नया पुस्तकालय और उम्मीदें

डा वैभव बताते है कि अक्टूबर माह मे यहां पर एक नए पुस्तकालय का भी निर्माण हुआ है। जहां पर आनलाइन शोध पढ़ने के लिए कंप्यूटरों की सुविधा भी है। नए पुस्तकालय के पास लाभी है। जहां पर कुर्सी-मेज रख कर खुले में पुस्तकालय बनाने की योजना चल रही है। यहां का पुस्तकालय विश्वविद्यालय के छात्रों और सिविल सेवाओं मे शामिल होने के इच्छुक लोगों के लिए एक थिंक टैंक और एक संसाधन केंद्र है। यहां आपको डेढ़ लाख से अधिक पुस्तके मिलेगी। भारतीय वैश्विक परिषद के महानिदेशक टीसीए राघवन और परिषद में अध्येता विवेक मिश्रा ने अपनी पुस्तक 'सप्रू हाउस- विश्व मामलों में संस्था निर्माण की कहानी' में लिखा है कि परिषद को इसके संस्थापकों द्वारा एक ऐसी संस्था के रूप में देखा गया था जो स्वतंत्र सोच को बढ़ावा देगी और विश्व मामलों में भारत के लिए एक नई स्थिति विकसित करेगी।